

चक्रवात का तापमै उच्च वायु प्रवाह से

है, जिसे विषमता केन्द्र के चारों ओर घुमते घूमते प्रकार  
के कारण वायु चक्रवर्तमाने लगती है, उन्ही उच्च में  
वायु लम्बवत् रूप से उठती है और संपन्नता की स्थिति  
में वर्ण लाती है। चक्रवात की उत्पत्ति का प्रयोगों में  
होती है -

पृथ्वीय विषमता केन्द्र में 30-65° अक्षांशों में दोनों गोलार्धों में

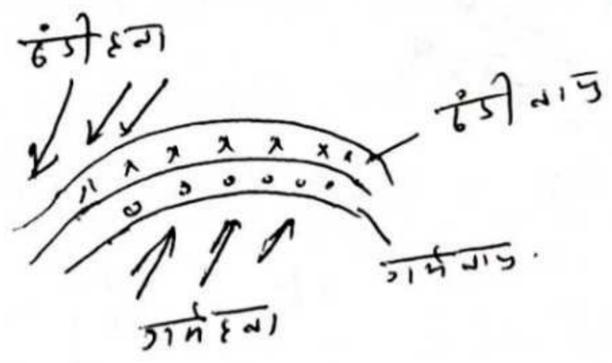
उपपृथ्वीय विषमता केन्द्रों में जहाँ एक पृथ्वीय हंडी  
 हवा गर्म पृथ्वीय पवन से अभिसरण का प्रभाव करती  
 है, इससे शीतोष्ण चक्रवात की उत्पत्ति होती है -

2) जब दो उच्च गर्म वायुसिद्धि 8-20° अक्षांशों के बीच  
 किसी विषमता सेत के चारों ओर चक्रवर्तमाने हुए  
 अभिसरण का प्रभाव करती है तब उच्च चक्रवात उत्पन्न  
 होता है जहाँ भी गर्म हवा ऊपर उठकर चक्रवातीय  
 वर्ण करती है।

शीतोष्ण मौसमिक क्षेत्रों में पृथ्वीय हंडी वायु

बर्केनीज का - polar front theory  
 पृथ्वीय वायुसिद्धि सिद्धि  
 वर्डन सिद्धि - wave theory  
 वांग सिद्धि

शीतोष्ण चक्रवात का पृथ्वी (सेत) होता है जहाँ हवाओं  
 तथा ऊँची हंडी से A - (3-12 लाख मी. क. म.)  
 B - (5-75 क. म.) से 15-30 क. म. लंबी, चौड़ी



समग्र वायुसिद्धि V  
 अक्षिण से  
 प-उत्तरी के चारों ओर प्रवाहित  
 ठंडा पवन stream track.  
 1. बर्केनीज एवं जे. बर्केनीज  
 2. पृथ्वीय वायुसिद्धि सिद्धि -  
 वांग सिद्धि से शीतोष्ण चक्रवात की  
 उत्पत्ति का कारण है।  
 3. पृथ्वीय वायुसिद्धि सिद्धि -  
 वांग सिद्धि से शीतोष्ण चक्रवात की  
 उत्पत्ति का कारण है।

वर्तमान तथा मैसोब का पृथ्वीय सीमावर्त

सिद्धि के अनुसार सीमावर्त पवन प्रक्रिया ही शीतोष्ण  
 चक्रवात की उत्पत्ति प्रक्रिया है, सीमावर्त पवन एक  
 पृथ्वीय प्रक्रिया (6 अवस्था) है -

1) प्रारंभिक या बाल्यावस्था - सीमावस्था

2) चक्रीय प्रवाह की प्रारंभिक अवस्था

3) गर्म जल का निर्माण

4) शीत सीमावस्था का आरंभिक प्रवाह की स्थापना

5) सर्वाणु की अवस्था

सीमावस्था क्षेत्र की अवस्था

प्रारंभिक या बाल्यावस्था में पृथ्वी की सतह

नया उष्ण गर्मवायु के मिलन स्थल पर स्थित

सीमावस्था का विकास होगा है, ठंडी वायु सीमावस्था में विद्युत

रैखिक के तटस्थ रहने के, ज्योंही इस प्रकृति का विकास

होता है, उसके बाद प्रवाह पर पूर्ण प्रभाव है ही की

आरंभिक वायु और वायुदाब का प्रभाव पड़ने लगता है

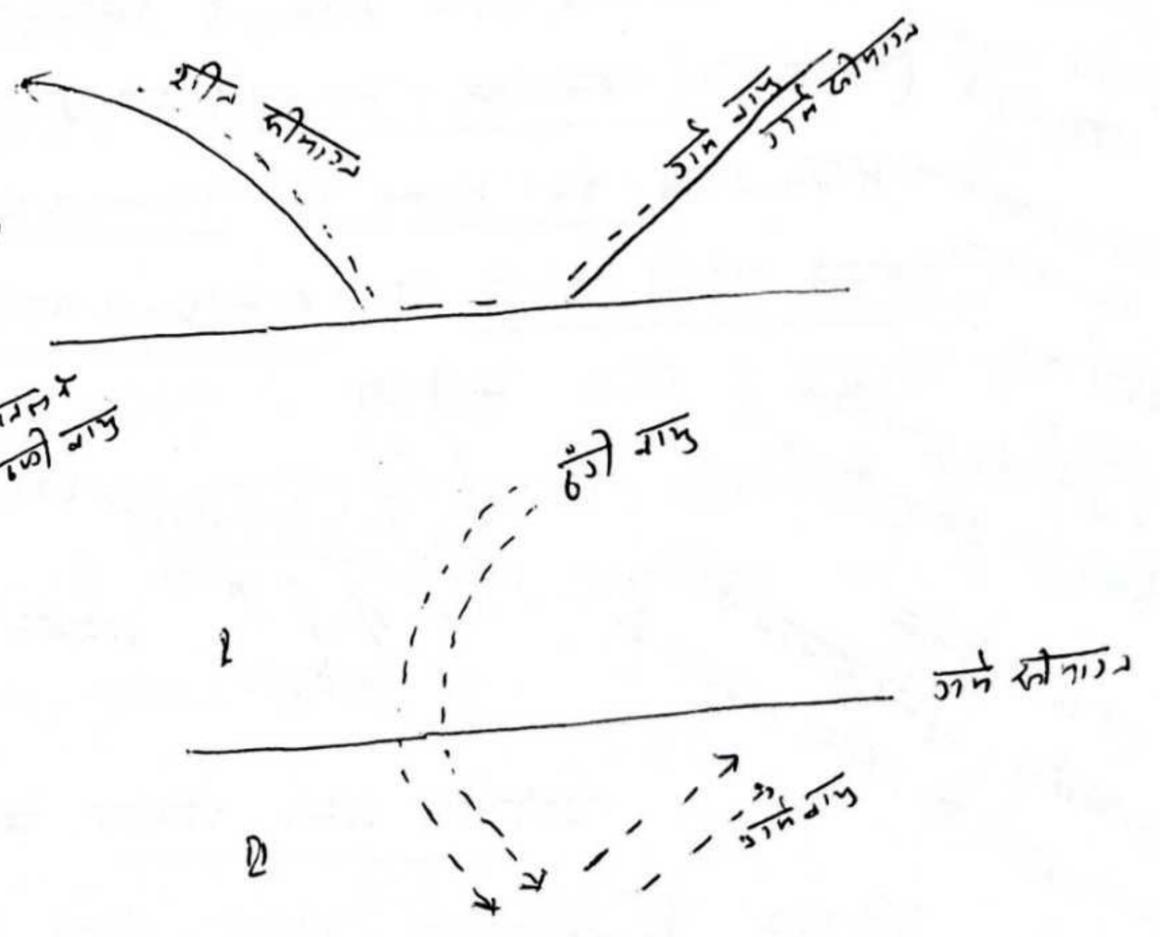
और ठंडी वायु प्रचलित मार्ग का अनुसरण न कर पाए

लेने हुए गर्म वायु प्रदेस में प्रविष्ट कर शीत सीमावस्था

नया गर्म सीमावस्था का निर्माण करता है, ज्योंही गर्म वायु

हल्की होती है, इसलिए पौर-2 उपर चढ़कर वायु

विलोमता की स्थिति उत्पन्न करती है, जहाँ वृद्धी अवस्था है



तीव्र अवस्था में गर्म वायु दृष्ट कर क्षेत्र पर लंबे

में बल पानी है, और वायु की चक्रीय स्थिति स्पष्ट में पानी है

नया शीत सीमावस्था और गर्म सीमावस्था का मिलन क्षेत्र निर्माण का

1) दो मिलन वायु प्रदेस (एक गर्म वायु प्रदेस और एक ठंडी वायु प्रदेस) की वायु प्रकृति पर एक सीमावस्था का निर्माण होता है।

2) दो गर्म वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था नहीं बनती है।

3) गर्म वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

4) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था नहीं बनती है।

5) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

6) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

7) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

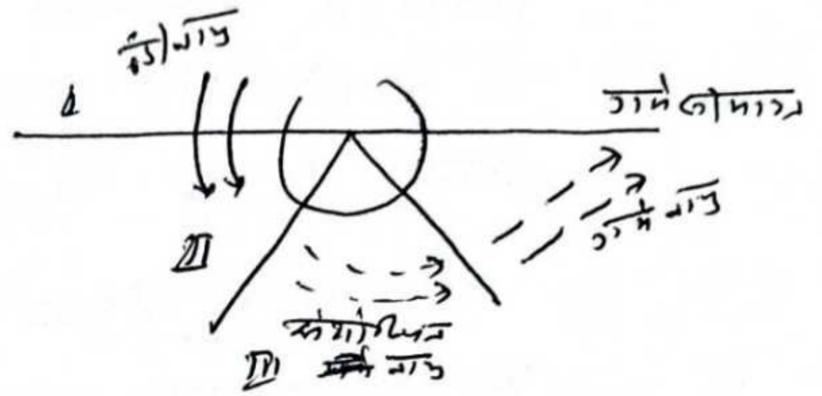
8) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

9) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

10) शीत वायु प्रदेसों के मिलन क्षेत्र पर सीमावस्था बनती है।

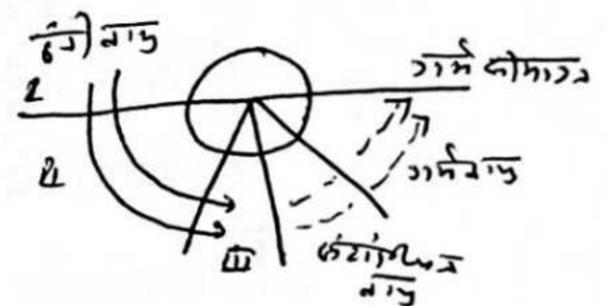
का सैद्ध बन जाता है,

- शीतोष्ण चक्रवात के प्रकार
  - ↳ महादीप चक्रवात
  - ↳ महासागरीय चक्रवात
  - ↳ प्रवाही चक्रवात
  - ↳ संतुल्य शीतोष्ण

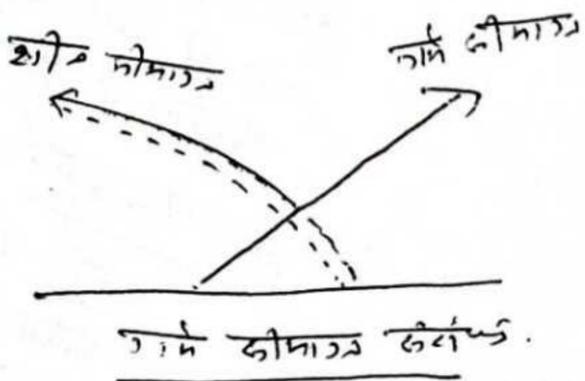
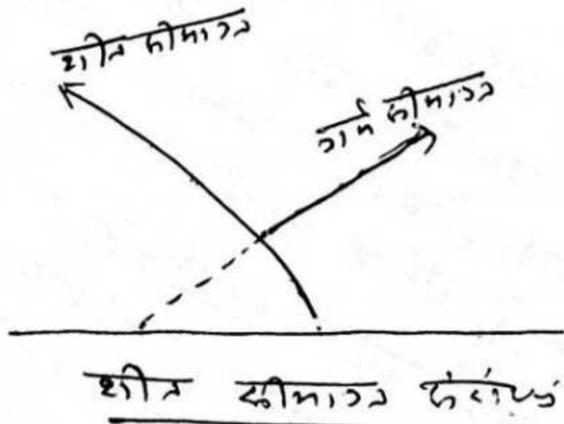


शीतोष्ण आवस्था में गर्म वायु रा सैन एक संकी पीने में बदल जाती है, लगभग 80% भाग पर हंडी वायु का प्रभाव होता है,

- विस्तार (35-65°)
  - ↳ 30 अक्षांश के उत्तरी गोलार्ध में शीतोष्ण क्षेत्रों में चक्रवात बनते हैं
  - ↳ 30 अक्षांश के उत्तरी गोलार्ध में चक्रवात बनते हैं
  - ↳ 30 अक्षांश के उत्तरी गोलार्ध में चक्रवात बनते हैं



गर्म वायु दक्षिण में मिल जाती है, प्रारंभ में शीतोष्ण क्षेत्रों के पास मिलती है, लेकिन अंत में यह वायु सैन में भी मिल जाती है, जो पूर्ण रूप से चक्रवातीय स्थिति है, संतुल्य शीतोष्ण में हंडी वायु हंडी वायु में मिल जाती है, लेकिन इनमें सामंजसिक ताप और दाब में अंतर होता है, क्योंकि उत्तरी गोलार्ध में हंडी वायु व्यापक परिचलन का चक्र होता है, अतः यह उत्तरी गोलार्ध में हंडी वायु के अक्षिक गर्म होगी तां गर्म क्षेत्रों के आगे स्थित हंडी वायु का जोष्ण तट पर चलने लगती है, इन गर्म संतुल्य शीतोष्ण आवस्था करते हैं, लेकिन यदि संतुल्य वायु का तापमान गर्म क्षेत्रों के आगे स्थित वायुद्वारा का कम होगा तां संतुल्य हंडी शीतोष्ण स्थित हंडी वायु का चलने लगेंगी, इन शीतोष्ण क्षेत्रों में शीतोष्ण आवस्था करते हैं, इन दोनों ही स्थिति में गर्म वायु पूर्ण रूप से सैन पर चला आता है,



अंत में आवस्था में वायु सैन में संतुल्य हो जाता है ?

